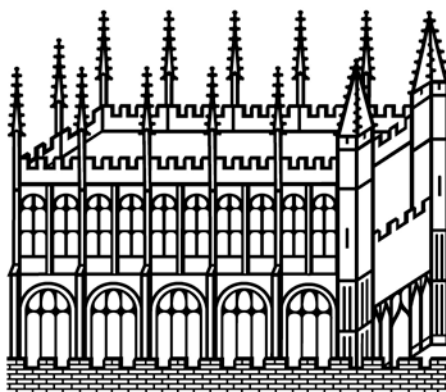




Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries
and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

<http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks>



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-
ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi Hiral 1

13.B.19. Hindi Hiral 1

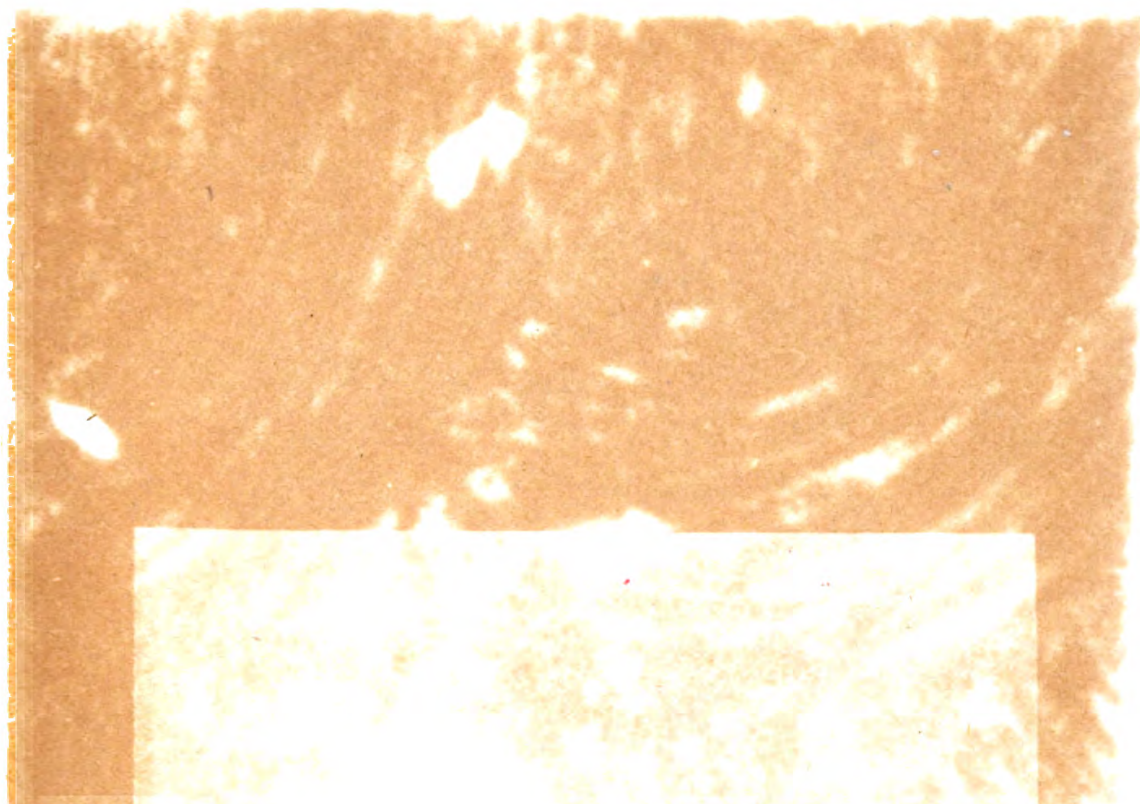
Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.

Presented

by

Munshi Aewul Bisnore.



Gitarasikā.

Gita Rasika

गीतरसिका ।

जिसमें

धुरपद खयाल कई रागनियां और कई प्रकार की
ठुमरी, होली, बसन्त, गज़ल, लावनी, दादरा
आदि पद हैं

बाबू हीरालाल

असिस्टंट मास्टर ज़िला स्कूल बिलासपुर सेन्द्रल
प्राविन्सेज़ ने बनायी
वही

GITA RASIKA

OR

A BOOK OF SONGS

COMPOSED BY

MUNSHI HIRA LAL,

ASSISTANT MASTER,

ZILA SCHOOL, BILASPUR,

CENTRAL PROVINCES.

ALL RIGHTS RESERVED.

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के यन्त्रालय में छपी

अगस्त सन् १८८१ ई०

सिवाय इस यन्त्रालय के किसी को अधिकार नहीं है कि इसको
वा इसको आशय को छापे वा छपवाये ॥

गीतरसिका ॥

सूचना

— ०० —

इस गीतरसिका में एक दो धुरपद एक दो खयाल और कुछ रागनियां और बहुतसी ठुमरी होली बसन्त गज़ल लावनी भरी हैं यह रसिका ऐसे २ महाशयोंके हेतु निर्मित हुई है जो २ जन कि एक दो धुरपद व खयाल कहकर और पुनि कुछ रागनियोंको गाकर प्रकार २ की ठुमरी होरी बसन्त दादरा आदि पदोंको गा व गवाकर अपना समय ऐसा काटते हैं मानो शोकमय समय के घंटे दो घंटे तक अपना मन बहलाते हैं कथित पदोंके अर्थ भी वे ही हैं जो जो कि कथित जनोंको साधारण पूर्वक बहुधा हर्षप्रद मालूम होते हैं इस रसिका के गाने गवाने में सत्यानन्द होवे चाहे न होवे परन्तु रसिकामें आनन्द कथित जन जानलेंगे ॥

किसीको अधिकार नहीं है कि कोई जन इसमेंको किसी भी पदको दूसरी किसी पुस्तक में छापे व छपावे ॥

इति

सन् १८८१ ई० ॥

॥ हीरालाल ॥



1990

10

[illegible][illegible]

... ..

1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 26

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

[illegible]

गीतरसिका ।

सूचीपत्र ।

नं०	रागनी	पृष्ठ	नं०	रागनी	पृष्ठ
१	चतुष्पदाछन्द	१	२१	तथा	६
२	तोटकछन्द	१	२२	सोरठ	७
३	खयाल—सोहनी	१	२३	काफी	७
४	तथा—तथा	२	२४	देश	७
५	धुरपद—खम्बाज	२	२५	तथा	८
६	तथा—तथा	२	२६	खम्बाज	८
७	भैरवी	२	२७	होली	८
८	तथा	३	२८	तथा	८
९	खयाल—सिंधु	३	२९	तथा	९
१०	वसन्त बहार	३	३०	तथा	१०
११	ईमन कल्याण	३	३१	तथा	१०
१२	कान्हडा	४	३२	तथा	११
१३	केदारा	४	३३	तथा	११
१४	आसावरी	४	३४	बसन्त	१२
१५	पूर्वी	५	३५	तथा	१२
१६	भंभोटी	५	३६	तथा	१३
१७	भंभोटी	५	३७	बसन्त	१३
१८	परज	६	३८	तथा	१४
१९	सारंग	६	३९	तथा	१४
२०	काफी	६	४०	तथा	१४

नं०	रागनी	पृष्ठ	नं०	रागनी	पृष्ठ
४१	ठुमरी	१५	५१	तथा	१८
४२	तथा	१५	५२	गजल	१८
४३	तथा	१६	५३	तथा	१६
४४	तथा	१६	५४	तथा	१६
४५	तथा	१६	५५	लावनी	२०
४६	तथा	१७	५६	तथा	२०
४७	तथा	१७	५७	चुटकला	२०
४८	तथा	१७	५८	दादरा	२१
४९	तथा	१८	५९	तथा	२१
५०	तथा	१८	६०	कहरवा	२१

२	लिङ्गि	३२	०	लिङ्गि	०
३	लिङ्गि	३२	०	लिङ्गि	०
४	लिङ्गि	३२	०	लिङ्गि-लावनी	३
५	लिङ्गि	३२	०	लिङ्गि-लावनी	३
६	लिङ्गि	३२	०	लिङ्गि-लावनी	३
७	लिङ्गि	३२	०	लिङ्गि-लावनी	३
८	लिङ्गि	३२	०	लिङ्गि-लावनी	३
९	लिङ्गि	३२	०	लिङ्गि-लावनी	३
१०	लिङ्गि	३२	०	लिङ्गि-लावनी	३
११	लिङ्गि	३२	०	लिङ्गि-लावनी	३
१२	लिङ्गि	३२	०	लिङ्गि-लावनी	३
१३	लिङ्गि	३२	०	लिङ्गि-लावनी	३
१४	लिङ्गि	३२	०	लिङ्गि-लावनी	३
१५	लिङ्गि	३२	०	लिङ्गि-लावनी	३
१६	लिङ्गि	३२	०	लिङ्गि-लावनी	३
१७	लिङ्गि	३२	०	लिङ्गि-लावनी	३
१८	लिङ्गि	३२	०	लिङ्गि-लावनी	३
१९	लिङ्गि	३२	०	लिङ्गि-लावनी	३
२०	लिङ्गि	३२	०	लिङ्गि-लावनी	३

गीत रसिका ॥

(१)

चतुष्पदा छन्द

जय जय गण राया, शंकर जाया, प्रथम पूजवत भारी ।
पारबती नन्दा, आनंद कन्दा, द्रवहो कलि दुख हारी ॥ १ ॥
अनादि अविनाशी, बुधा गुण राशी, भाल बिशाल सुमोहे ।
जय मूषक बाहन, वरगज आनन, एक दशन छबि मोहे ॥ २ ॥

(२)

तोटक छन्द ॥

जय देवि महा अजकी तनया । दुति दामिनि धारिणि का-
रिणि भा ॥ १ ॥ जय ज्ञान मते परमेश्वरी । गुण रूप गान
बहु देत खरी ॥ २ ॥ जय देवि नमामि कृपा करणी । जननी
छबि जाय नहीं बरणी ॥ ३ ॥ नहिं आदि नहीं अवसान नहीं ।
ग्रह बीच यही तव रूप सही ॥ ४ ॥ जय ज्योति सुरूप धरी
द्रवहो । जननी जननी सुकृपा करहो ॥ ५ ॥ कवि की कविता
मुनि की मुनिता । सुर की सुरता सब काज यत्ना ॥ ६ ॥
नभकी सबहीं बिजली बिजली । तव रूप करे सुगली सुगली ॥ ७ ॥
नमहूं नमहूं जग की जननी । करहो मम तोष दयी शरणी ॥ ८ ॥
बुधि गायनकी बहु देहु यदा । जय शारद शारद देवि सदा ॥ ९ ॥

(३)

खयाल सोहनी ॥

लाजे लाजे लजाये लाले ललना ॥
लागी लाजन सुकाम काहू की,
लागे भलना ललना कलना ॥ १ ॥

(४)

खयाल सोहनी ॥

भई रात सजनी आधी रतिया ॥

पिया हमारे अजहुं तो न आये, जानों बिलमरहेसवतनिया ॥ १ ॥

मेरो जियरा अबतो कलपतहे, फाटतहे बहुमेरीछतिया ॥ २ ॥

(५)

धुरपद-खम्बाज ॥

आज अधिराज राजि बिराजे, सकल साज साज साजि साजे,
राजि राजे सजि सजाइ आज ॥ लसत कलगि सिर कानन भूषण,
हस्त अस्त्रशस्त्र कछुहुन दूषण, अस पिया मेरेसाजे साज ॥ १ ॥

(६)

धुरपद-खम्बाज ॥

गाइये नाचिये सुरिभाइये, प्यारे मनवारे प्राण पिया, निशि
दिवस हमारी जो मुख खान ॥ वारिय तन मन सेविय निशि
दिन, आन काज नहिं यह काज सुमन, बाढत नेह बहुमान
समान ॥ १ ॥ पालिय आजा लोकिय तारुख, जाते पति प्रिय
पावहीं बहु सुख, माने हमकहं सुप्रिया अपान ॥ २ ॥

(७)

भैरवी ॥

जागे जियरा मेरी जागे जिय मेरे ।

भोर भयो अबतो उठ बैठी ठिगतोरे ॥

उडु गया अब रूपनलाग, इन्दुश्वेत होरे ।

काग बोल भांति भांति, रविआनिकरोरे ॥ १ ॥

भारी जल लाई भरि, मज्जन मुख होरे ।

जगहु जगहु जगहु पिया, पियकाज लगोरे ॥ २ ॥

(८)

भैरवी ॥

जगिये प्रिय प्रिय प्राणनाथ अब, जागियप्राण सु प्यारे ।
 सोवत शय्या सुन्दर रजनी, बीतगई सब वारे ॥
 पुहुप फाट घाट जोति चन्द्रमा, छिपन लगेसब तारे ।
 रवि किरणी अब दृष्टि परतहै, बोलें बहु कागारे ॥ १ ॥
 लोग लुगाई काज करत हैं, तुम सिजिया प्रिय प्यारे ।
 द्वारे अपने भीर भई है, प्रीतम जगहु हमारे ॥ २ ॥
 माजन आनन कर पद धोवन, भूषण बस्त्र सजारे ।
 प्राण प्रिय अब बिलम्बहोतहै, जगहो जगहोप्यारे ॥ ३ ॥

(९)

खयाल सिंध ॥

अहे सइयां हमारे, विनय करौं परदेश न गमनोरे ॥ कलपत
 बिलपत, रोवत धोवत, हृदया फाटत, मोर प्राण निकरोरे ॥ १ ॥
 बिष मंगाऊं, मैं अब खाऊं, प्राण छड़ाऊं, तनतेन लेचलीरे ॥ २ ॥

(१०)

बसन्त बहार ॥

सइयां सोऊं सुख सन्तोषे । लपकत भपकत, उछलतपुछलत,
 कूदत फांदत पोषे ॥
 बार बार मो चुम्बत लपटत, हृदया दाबत माई ।
 करमोड़त पुनि कटिमम तीड़त, रोहत ऊपर आई ॥ १ ॥
 करहीअचेत मोही न चेत, करत क्रीड़ बहुतोही ।
 तनमनकी सब तपनबुभावत, तबछांडतहै मोही ॥ २ ॥

(११)

ईमन कल्याण ॥

सजनी मैं तो बिरहा की मारी, आई ॥
 एक बरष मानो युग बीतो, प्रिय नहिं पता पताई ।

आश मिलनकी लाग रही है, बेग आन सु बताई ॥ १ ॥
 आन कह गये नहिं आये प्रिय, पूरी प्रतिज्ञा माई ।
 आज रात लों जो नहिं आये, प्राण हानि सहसाई ॥ २ ॥

(१२)

कान्हडा ॥

सदयां में से आइ कहै, परदेश सुगमना ॥
 सुनत हृदय अस बेधयो माई । माने बाण लगे बहुआई ॥ १ ॥
 कलपत बिलपत रजनी बीती । कांपत सुहृदय जूझी सीती ॥ २ ॥
 रोषत बीती दिन चण्डाला । माने फांसी रतकर जाला ॥ ३ ॥
 प्रिया पथारे पयाच प्राणा । कन्तु करें जो निजमन माना ॥ ४ ॥

(१३)

कैदारा ॥

सखी शोक संसर्ग सार्ज सखि सार्ज सजा ॥
 गली गलीमें सुगली आली । लोकी नार्ही परजग जाली ॥ १ ॥
 कलपन बिलपन तलफन रोषनासिसकन सांसन कछु नहिं जौवन ॥ २ ॥
 व्यथा अरु पीर दुख बहु नाना ॥ रोषा सो गबहु अहित अमाना ॥ ३ ॥
 कल्पित हर्ष अरु कछु नहिं माई । जोइ जगत् में लोकी आई ॥ ४ ॥
 याते बिधि भल नार्ही कीन्हीं मांगे मृत्यु नहिं जौ दीन्हीं ॥ ५ ॥

(१४)

आसावरी ॥

प्राण प्रियारिस तजके, हंसि हंसके बीली ॥
 नयन उधारो आनन खोली, मुख तेरो निस चाखों ।
 कंठ लगाजं धीरे धीरे, माधुर बाणी भाखों ॥ १ ॥
 मानहिं त्यागो मानहिं धारी, हों हैं तेरो चरो ।
 सुधा सुरस तव मुखनि जियावो, नहिं तब मरणो मेरो ॥ २ ॥
 कोप किये कछु कारण कहा, कहो प्रिया मनखोली ।
 मैं तो कबहूँ चुको नार्ही, तुम कोहो रिस बीली ॥ ३ ॥

(१५)

पर्वी ॥

नदियां न जावोसइयां शितियापरतहे, शितियादेतअकड़ायहो ॥

कर पद तुम्हरे कोमल पतरे, बायु बतास लगिजाय हो ।

गोरो बदन बनैगो कारो, सुन्दरता सब नशायहो ॥ १ ॥

शीती बतास चाड़ो लागे, ओष्ठ दशन कम्पाय हो ।

याते मोरे ठिग तुम बासो, सुन्दर शय्या सजाय हो ॥ २ ॥

(१६)

भंभोटी ॥

सजनी सुसखी की शुभ सुन्दरता, शोभा शोभा साज सजाई ॥

मुखड़ाचमकतहेमानो चन्द्रमा, छबि छबिछबिमांछबिछबिछाई ।

लोचन मृगनी मोन पंक्रज पात, नासिक सुंदरकीर सुहाई ॥ १ ॥

दशन कली दडिम ओष्ठ बिम्बा, मालन कोमल मनु कुमलाई ।

सुकंठकपोतजनु श्रीफलहृदया, देहदामिनी अतिचमकाई ॥ २ ॥

केश शीश मनु भ्रमर बहु मात्स, नाना बिधि कररूप बनाई ।

केरा मानो सुजांघ कोमलता, तन स्पर्शकर मललग जाई ॥ ३ ॥

पतरी अंगी कोमल बहु रंगी, शंगार सोरह साज सजाई ।

भूषण बारा भावत ननविधि, मानोरती बनी सुवनाई ॥ ४ ॥

सुन सजनी वा सखी बडभामिनी, रीकत पिया देखतरिभाई ।

हमरे बियातोहमसे नहिंबोलें, दर्दरीतियह उलटिचलाई ॥ ५ ॥

(१७)

भंभोटी ॥

साजन मेरे अब कोप गये, रिस भरे उठे सवतनिके भये ॥

पिया नासिका माखिन बैठे, ऐसे ऐसे कोपी सुभये ।

तिनकी कृपा रहों अभिलाषी, सजनी निष्ठुरता आजठये ॥ १ ॥

ना जानों का चूक परीहै, कछुहु नहिं मोसे बोल दये ।

आवत थीमैं सिजिया सजनी, इतनेमा चले उठितोगये ॥ २ ॥

(१८)

परज ॥

बलम मोरे हमसे छल कोन्हे आज, ऐसे कपटी सइयां ॥
हमसे तो आवनहि कहि गये । आप सजे कहुं अंत साज ॥
हम तो जानतहैं कपटी बड़ । उन्हें सबतनी सेां काज ॥ १ ॥

(१९)

सारंग ॥

मोसे सही न जाइ बिरहा की पीर ॥
अस मन लागे जियरा त्यागों, जाय मरों नदिया सुतीर ।
कूप बावली जाय परों धौं, पावक जाय जरों अधीर ॥ १ ॥
लाजं खाजं बिष धौं सजनी, सोजं शय्या नहीं धीर ।
आनि मिलावो सइयां मोरे, जर जायरी ऐसी पीर ॥ २ ॥

(२०)

काफी ॥

मइया मोरी गमना करादे मोरा ॥
संगनि सायनि नाम धरतहैं, कछुहुन जावे तोरा ।
तुमही माई सोच सुदेखो, दिन बीते नहि घीरा ॥ १ ॥
हारि जननीसंगिसहली, नित नितनिजपति ठीरा ।
भोगबिलासैं बहुतखिलावैं, ललना मिजनिजकोरा ॥ २ ॥

(२१)

काफी ॥

सखीरी सइयां संग सेजिया सोजं । लाज लजाई लालनला
जें लावैं लौक लजेजं ॥ सास सुननदी साली साठू, जेठ जि-
ठानिहुं जोजं । मान मनाईमानन माने, मनान मानमनोजं ॥ १ ॥
भोरे भारे भर्ता भोरे, भोर भये भोरोजं । रोवत रोवतरीती
रजनी, कछुन कोन्ह कोनोजं ॥ २ ॥

(२२)

सोरठ ॥

मान करीना मानिनि मान ॥

बिनय करत बहु बेर भईहे, पारण पयानहिं प्राण ।
कोपिनि अबतो कोप त्यागो, मेरी मान होआन ॥ १ ॥
कर पद सबरे शिथिल होतहैं, शरीर कम्पाय मान ।
सांस लेउंअति सांसत सिसकत, नेक इत देतब कान ॥ २ ॥
भूख पियास नोंद सब खोई, घर बाहर नहिं सुहान ।
रात दिवस तब ध्यान रहतहै, सत्यसुसत्यसबजान ॥ ३ ॥
हाथ जोरी पइयां परतहैं, शीशहिं पयानो प्राण ।
जो कछु कहैं करैमैं सोई । अबहुं तो मानिनि मान ॥ ४ ॥

(२३)

काफी ॥

प्राण प्रिया आय गरे लग जाओ ॥

पावक तप बहु बली होतहै, तनकी तपन बुझाओ ॥
हाथ जोरिके चरण गिरत हैं, मोपर ध्यान लगाओ ।
यही काज या जग के माहीं, बिषयन मुख्य कहाओ ॥ १ ॥
जब लगि आवो तपन दहतहै, शीत रसहिं पहुंचाओ ।
नहिं तो प्राण पयान होतहै, आओ आओ आओ ॥ २ ॥

(२४)

देश ॥

सखीरी सेज सेज सजना साथ ॥

हियमां हारी हारी हारी, हेरी होत हत हात ।
मनात मनात माने नाहीं, मान मनई मनात ॥ १ ॥
भारे भर्त्ता भेवों भेहूं, भृकुटी भय भय सुभात ।
जोऊं जियरा जियरा जारत, जियरा जियरा कुजात ॥ २ ॥
चित बोहू तोचित नहिंचेतै, चेतनचाहि चितचात ।

सजनी सजना सोवत संगत, सोवे नाहिं सोवात ॥ ३ ॥

पांव परत हैं प्यारी जारी, पावें पाइन प्रभात ।

जालों जाने जावन जाहें, जावेनाहिं जबजात ॥ ४ ॥

(२५)

देश ॥

जाऊं न पनिया मइया नदिया तीर ॥

नदिया मेरे कण्ठक घेरे, पन्नग चलहीं अधीर ।

बाध भालु बहु बानर वानर, नाद करहीं करि भीर ॥ १ ॥

बाटहिं मइया युव जन ठाढ़े, नैन सैन करें मीर ।

बोली ठोली मारहिं मोहीं, मरें लाज भय सु भीर ॥ २ ॥

(२६)

खम्बाज ॥

सखी सइयां संग सोवेनाहीं, पावका तप में अधिक सताहीं ॥

हाथ जोरि अरु पइयां परि हारी, कलपी बिलपी माने नाहीं ।

हारी सजनी उपाय नहिं सूझे, मरण सुठानी मैमन माहीं ॥ १ ॥

देखा आली मोरी संग सजनी, बाल खिलावे कोरा माहीं ॥

अबलों सखी मैं कछु नहिं जाने, पिय मेरे भल कैसे आहीं ॥ २ ॥

(२७)

होली ॥

बिरहा को रोग लगे मोहिं भारी ॥

खान पान भल भल न भातहै, भूख पियास बिसारी ।

सारी रजनी नोद न आवे, बिरहा की मैं मारी ॥

सब ते हम हो हारी ॥ १ ॥

गृह गृह के सब लोग लुगार्ह, भय होरी खिलवारी ।

सानन्द नार्चें गाय बजावे, सिसकत हम सिसकारी ॥

येसी आपत्ति भारी ॥ २ ॥

सुनो सखी नहिं होरी खेलों, यदि पिय नहिं दरसारी ।

नाहिं तो प्राण पयान करहीं, महि उलटी हो जारी ॥

भई मीन बिन बारी ॥ ३ ॥

प्रीतम तुम्हरे संग रहत है, ताते ही मुख धारी ।

निठुर प्रिया मिथुरता ठानी, मो कहं निपट बिसारी ॥

अस होरी जर जारी ॥ ४ ॥

(२८)

होली ॥

आली जरीरी अस होरी बरीरी ॥

जरि जावे अस बसन्त सजनी, ऐसे फाग जरीरी ।

पावक लागे रंग गुलाल मां, पिचका भार परीरी ॥

भल बालम बिसरीरी ॥ १ ॥

कड़ावा तलौं हांसन खेलन, गावन नाच बरीरी ।

चूल्ह जरी अस होरी कौतुक, असी धूम सु लमोरी ॥

बालम बिना जरीरी ॥ २ ॥

तुम तो सब आनन्द मगन हो, बिरहा है तन मेरी ।

दावा दग या तनमां सजनी, प्राण पयान बरीरी ॥

नेही नहिं गृह मेरी ॥ ३ ॥

बेग बलम अब सुध तुम लेवो, नहिं तो होवत होरी ।

तन मर्म आरि होरि मां जारों, होरी जाय जरीरी ॥

प्रिया होरी बरीरी ॥ ४ ॥

(२९)

होली ॥

सङ्गों को जोऊ आन दिखिआ ॥

सङ्गों बिन सब सून लगत है, घर बाहर न सुह आओ ।

भूख प्रियास नींद सब भागे, नेक चैन नहिं आओ ॥ १ ॥

जब प्रिय प्रीतम घर महं आवें, तबहिं प्राण सुख पाओ ।

बेग हमारे कन्तहीं लावो, जाते हो मन भाओ ॥ २ ॥

(३०)

होली ॥

सबतनिया मोरी होरी ऐसी आई ॥
 चावा चन्दन केसर अबीर, रंग गुलाल मिलाई ।
 संगकी संगनि सखी सहेली, हिल मिल फाग मचाई ॥
 (१) मै तो मरन धराई ॥ १ ॥
 सजि सजिके सब शंगार सजि, सब गृह ते चल धाई ।
 गावहिं नाचहिं हरष हरष के, मानो चैन उड़ाई ॥
 हम बिरहा मर जाई ॥ २ ॥
 सब निज सइयां संग सखीरी, खेलें होरी आई ।
 हम इकली तलफें गृह मांही, मोन नीर नहिं पाई ॥
 अस हमरी गति माई ॥ ३ ॥
 जावो सजनी लाव पियाको, अबहीं देखुं बताई ।
 नहिं तो भोकीं तन होरी मां, चाहे महि उलटाई ॥
 सबतनिया अस आई ॥ ४ ॥

(३१)

होली ॥

सबतनिया होरीमां आस लगोरी, आग लगोरी बज परोरी ॥
 बिजुरि परे या बसन्त ऊपर, अहिनि डसे या होरी ॥
 नाहर निगरे या कौतुक का, राहु यसे या परोरी ॥ १ ॥
 माटी मिलो या रंग गुलाल, धूरे परो सब मोरी ।
 बिष परो या भंगके माहीं, पान सुपुंगि जरोरी ॥ २ ॥
 भूषण सगरे पाथर होवें, होवे टाट पटोरी ।
 दावा लगो या सिंगार माहीं, कारो मुखहिं करोरी ॥ ३ ॥
 ठोलक भांभ मृदङ्ग मंजीरा, बाजन सकल बरोरी ॥
 सडो गडो तुम्हरो भूम भूमनी, घर मेरो लग होरी ॥
 आह दई हम काह बिगारा, पिया नाहिं घर मोरी ॥ ४ ॥

होरी हेतु जरीं में सजना, होरी नाहिं जरोरी ॥ ५ ॥

(३२)

होली ॥

सइयां संग मोरे अब होरी मनाई ॥

॥ साजे सखेनी सिंगार साजे, सजि सजि सज सजाई ।

साजि सामयो जानि नाचकी, अपन अपन संगआई ॥

॥ १ ॥ निज निज पियहिं रिझाई ॥ १ ॥

खेलें खेलें सुरंग गुलाल, पिचका पियहिं चलाई ।

॥ हिल मिल के चले फाग करोरी, गाय मचाय बजाई ॥

॥ निज निज पियहिं रिझाई, आनन्द मगन सुधाई ॥ २ ॥

॥ काम नाहिं बहु सिंगार करके, ऐसी होरी आई ॥

हे सजनी जानि चूको अवसर, पिय हमरे संगे आई ॥

॥ ३ ॥ मे तोलीक भुलाई ॥ ३ ॥

(३३)

होली ॥

पीर उदर अस रंग रंगाई । सही न जाइ मोसे अब भाई ॥

जूड़ी तप सब आदि निर्बलता, होरी खेलन धाई ।

हिल मिलके सब फाग मचावें, कर निर्बल में भाई ॥

॥ १ ॥ हे कछु वश न चलाई ॥ १ ॥

बोतल गिलास मारि कटोरी, सब पिचका सम आई ।

जड़ी बूटि सब औषधि नाना, बिधि बिधि रंग भराई ॥

॥ २ ॥ बान्ति आदि बहाई ॥ २ ॥

पीर सुमद अस मदा लावत है, मोहि अचेत कराई ।

रोवन धोवन मानो गावन, मनु कबीर चित्ताई ॥

॥ ३ ॥ तोसन गारी खाई ॥ ३ ॥

डाकुर वैद्य सकलन गुनियन, हार सकल जन खाई ॥

ऐसी पीरा कबहुन भोगी, प्राण हानि सुजनाई ॥
 (५६) काहे लेत न भाई ॥ ४ ॥
 (३४)

॥ वसन्त ॥

कत जग जाई यही प्रीति आली, रैन प्रिया बिन साली ॥
 बिधि बचरी याही उमजाई, सोच बिचार न चाली ॥
 मन माने की करतब जानी, दई गति कुगति आली ॥ १ ॥
 नीर निरदयी मीन बिन रहत, मीन न जल बिन आली ॥
 रबि रहही बिन पंकज सजनी, पंकज रबि बिन जाली ॥ २ ॥
 कुमेदनो अरु चकोर मत्ती, इन्दु बिना नहिं पाली ॥
 निशि नाहा नहिंदुःख उठावे, दई उलटि गति आली ॥ ३ ॥
 ऐसी सजनी हमरी गति है, प्रियहिं दुःख नहिं साली ॥
 हम मरही बिरहा के मारे, जरै अस प्रीति आली ॥ ४ ॥

(३५)

वसन्त

देहु मधुर चुम्बन एक प्यारी ॥
 नाहीं नाहीं तुम तो बोलत, हम का मिष्कल मारी ॥
 ओष्ठ कांपत जिह्वा चपलत, दशन तीर सब जारो ॥ १ ॥
 सुखत गर अति भारी ॥ १ ॥
 तोर कपोल कमल सम कोमल, मिष्ठानी तूलहारी ॥
 मेरो ओष्ठ यदि पाथर तुल्य, तदपि बस नहीं आरी ॥
 अब तो जानि तरसारी ॥ २ ॥
 नाहीं तो मम ओष्ठहिं कटि, रसना नाशहु बारी ॥
 दशनन मेरे काइ लगावो, तौ हू मन नहिं टारी ॥
 इत सुध्यान लगारी ॥ ३ ॥
 चुम्बन दिये करुन घटि है, मोर प्रेम बठजारी ॥

हाथजेरि के चरण गिरतहैं, शीश तोहि में वारी ॥

॥ देहो देहो प्यारी ॥ ४ ॥

हठतजि मोरी बिनती माने, पिघलहु द्रवहु प्यारी ।

प्रेम रसचाखे बिननरहि हैं, बरु प्राण निकरि जारी ॥

॥ चुम्बनलेहो प्यारी ॥ ५ ॥

(३६)

॥ बसन्त ॥

प्रेम रस मोहिका चाखनदेरी ॥

प्रेम रस लाग औष्ठ सूखत, रसना निकर परेरी ॥

गर सूखत है मानो सुतृषित, किमि तृषा बुझेरी ॥

॥ काहे मान करेरी ॥ १ ॥

प्रेम रस लाग जिय निकरतहै, जलन पियास बुझेरी ॥

रह रहके मन अग्नि बरत है, ऐसी तपन बरेरी ॥

॥ से नहिं जात कहेरी ॥ २ ॥

तब हठते मम प्राण बिलपहीं, मन नहिं धीर धरेरी ।

हां हां करिके चाखों रसका, जाते तपन हटेरी ॥

॥ देरी देरी देरी ॥ ३ ॥

(३७)

॥ बसन्त ॥

आज सइयां बर बस मेसे कीन्ही ॥

चुम्बनचाखे हृदया दाबे, लपटत उठाय लीन्ही ।

॥ कर मरोरके पटक भटकके, पलका पौड़ा दीन्ही ॥

॥ मोरी पीरन चीन्ही ॥ १ ॥

पुनि तनकी सबतपन बुझाये, कामशान्तनिजकीन्ही ।

॥ तब तो लागे मानो माखी, मन मानेरस लीन्हां ॥

॥ अति दारुण दुख दीन्ही ॥ २ ॥

(३८)
॥ ४ ॥ बसन्त ॥

सहयां सुघर संग साओ मेरे । जातितनकीतपनबुझारे ॥
विश्राम यह मह शय्या साजी, गन्ध सुगन्ध सजारे ।
भांतिभांति कर मेधमिष्ठान, फल पकवान धरोरे ॥ १ ॥
सब सुख है पर तुम बिन सजना, सबहीं सून परोरे ।
चलोचलो अबबिलम नाहोवे, मनसुलगतबहुमोरे ॥ २ ॥

(३९)

॥ ५ ॥ बसन्त ॥

हस्तकीरमेरोगयेऊ उड़ाई । मलतहस्तरहेऊपछताई ॥
पालि पोसि बहु प्रेम्यों नेह्यों, मंजु मिष्ठान जिवाई ।
नशिदित राखत निजकोरामहं, हिडौल सेज सुवाई ॥
सो अब उडत भजाई ॥ १ ॥
कीर सुनागो बांस कूप महं, डारि कानन घुमाई ।
गगन केर मै तारा तीड़े, नीर पताल कड़ाई ॥
जल निधि थाह यतनाई ॥ २ ॥
जो जो नाहीं करनन योगी, सोसो मै करवाई ।
लड़ेउं भिड़ेउं सब लोगन से, बहुत कुनाम उठाई ॥
तै हुन बनत बनाई ॥ ३ ॥
मेरे जियमां अस आवत है, सो जाऊं विष खाई ।
आह दई हो का करहो अब, कीर मृत्यु कहं पाई ॥
नतु मोकहं ले जाई ॥ ४ ॥

(४०)

बसन्त ॥

पीर उदर कछु कहिनहिं जारे, बिन मृत्यु के मर्यों मै मारे ।
ऐसा पारा कबहु न भोगी, जीवन राज हमारे ।

जैसी लोगो अब भोगत हैं, टरत नहीं बहु टारे ॥

चलत न बश कछु हारे ॥ १ ॥

डाकुर बैद्य गुनिया लोगन, छोट बड़े सब हारे ।

औषधि मौषधि भाड़व फूंकव, कछु नहिं काज सुआरे ॥

भल उदर रोग वारे ॥ २ ॥

खाइ न खाई जब हों चाहे, पीरत निशि दिन सारे ।

होवत भारी पीरत शूलत, बेधत बरछी वारे ॥

जरे अस रोग वारे ॥ ३ ॥

बिलपत कलपत रोवत धोवत, अचेत सो करडारे ।

जीवन अस में इच्छित नाहीं, देमाहि मृत्यु भलारे ॥

ईश बिनय सुन जारे ॥ ४ ॥

(४१)

ठुमरी ॥

भला सजना इत आजारे ॥

बाट निहारत बीती रजनी, भोर बेग नहिं होजारे ।

तलफत हैपिय तुम्हरे लागी, गरे आय अब लग जारे ॥ १ ॥

बासर फाटत फाटत जियरा, काहे प्राण निकर जारे ।

आशा लाग रही सुमिलन की, आज आजा आजारे ॥ २ ॥

(४२)

ठुमरी ॥

प्राण प्यारी कहां रैन रमाई, रैन रमाई रात बिताई ॥

बाटत निहारत लीचन फूटे, आंसुवन सरिता बहाई ।

हृदय मोर शत खण्ड खण्ड भयो, काहे ठानी निठुराई ॥ १ ॥

रजनी सारी सूनी शय्या, तारा गण इन्दु बिहाई ।

मनो गृह मां दीपक नाहीं, ऐसी तोही बिन छाई ॥ २ ॥

पल घंटा सम घंटा रजनी, युग सम सब रैन गंवाई ।

भोर होत कत आई प्यारी, कस यह दिवस बीत जाई ॥ ३ ॥

(४३)

ठुमरी ॥

प्राण प्रियां काहे हठ ठानी, ऐसी मन मानी ॥
 तव बिन मोहो भल नहि लागे, निशि बासर तोर ध्यानी ।
 बाधर मोहो लोग कहत है, मैतो तोही पहचानी ॥ १ ॥
 इतहि निहारो नयनहि खोलो, हसो कोप नहीं आनी ।
 रत रस चाखीं गरे लगावों, जियरा जूड़ करौ पानी ॥ २ ॥

(४४)

ठुमरी ॥

जावो जावो सइयां चुम्बन में नाहीं देजंगी ॥
 चुम्बन देनो बहुत कहावे, छूवन में नाहीं देजंगी ।
 चुम्बन दिये मो कछु न मिलिहै, तुमहीं मैनाहीं भेजंगी ॥ १ ॥
 चुम्बन लिये मम कपोल कोमल, पीरा पीरा बहु सेजंगी ।
 दशनन तुम्हरे गड़हीं ऊपर, ओष्ठ स्पर्श नाहीं लेजंगी ॥ २ ॥
 महि उलटे बरु नभ टूट परे, बर बश प्राण त्याग देजंगी ।
 मोन सुहावे इतनो बिनती, नहि नहीं नाहीं देजंगी ॥ ३ ॥

(४५)

ठुमरी

रात बसे जहां जावो तहां सइयां ॥
 रजनी काटे चैन उड़ाये, ताही को लेव बलैयां ।
 काहे को अब बात बनावो काहे परत हो सुपइयां ॥ १ ॥
 वा सबतनिया पर तुम रीझे, वाहीतो पार लगइयां ।
 मोरे ठिग अब काज नहीं है, वाही से जोरो रतियां ॥ २ ॥
 झूठी मूठी बिनय करत हो, करी तो नाहिं अति बतियां ।
 बज परी वा सबतनि ऊपर, जहां बसे सारी रतियां ॥ ३ ॥
 मैं तो अबतो रत नहि करिहैं, जावे जीव तो निकरियां ।
 सारी रतियां भूल रहेहो, जाव जावो तहां सइयां ॥ ४ ॥

(४६)

ठुमरी ॥

बतावो बालम बसे कहां सारी रात ॥
 सारी रजनी तलफत बीती, निहारत तोरी बाट ।
 बच्च समान काटी मैं सजना, तौहु तो तुम अठलात ॥ १ ॥
 बाट निहारत नयना फूले, बड़ आंसुवन ठर जात ।
 सांस लेत अति सिसकी सांसत, जिया जाबे मतलात ॥ २ ॥
 मम शय्या थल मीन भये हम, तुम नहिं रहे जल पात ।
 आशा रही मिलन की प्रीतम, ताते जिया नहिं जात ॥ ३ ॥
 तुम्हरे लोचन नींद भरीहै, कहे अब सांची बात ।
 कौन सवतनिया तुमहीं पिया, जगाई सारी रात ॥ ४ ॥
 जो जान जाऊं वा सवतनि का, देहुं करे जवालात ।
 लात मारि होरी मां बारैं, ऐसी करी मम घात ॥ ५ ॥

(४७)

ठुमरी ॥

बलम मोहे बेदी गढ़ा देरे, बेदी गढ़ादेरे, हीरामोती जड़ादेरे ॥
 सतलड़ पचलड़ बाजू कंगना, फूल करण नथ सब हेरे ॥
 बिनबेदी मम मुखनहिं सोहे, अस बेदी बनवा देरे ॥ १ ॥

(४८)

ठुमरी ॥

जावो प्रिया नहिं मेरे काम की, मेरे धाम की ॥
 हेरी गवांरी तुम तो बारी, आय परी रही प्राण की ।
 कहा कहारो आपति हम भेली, तोहि कीन्हीं अपनान की ॥ १ ॥
 तब लगि मानिनि हमसे सब बिगरे, जनक जननी सब आनकी ।
 मित्र सित्र सब तब त्याग दीन्ह हम, तो न लाग मेरनाम की ॥ २ ॥
 अब लगि तुम तो बहु प्रेमत मोही, जाय सुभई अब आनकी ।
 तेहैं मेरे गर काटन हारे, नेह तोरे उन बान की ॥ ३ ॥

हमसे तुम तो बहुत कपट कीन्ही, बोलत ऊपर सुमानकी ॥
तोरो अब तो मुख नहीं देखैं, होय पयान बरु प्राणकी ॥४॥

(४६)

ठुमरी ॥

नयमां लटकनि नाहिं, बलम लटकनीलगादे ॥
लटकनियां मां हीरा लागे, ऊपर मोति जड़ादे ॥
जाते होवे ओष्ठ की शोभा, ऐसो से लटकादे ॥ १ ॥

(५०)

ठुमरी ॥

हे सइयां सारी रंगादेरे, तापर पुनि जरी टका देरे ॥
भांति भांति के भूषण भावें, अंग मां शोभा देरे ॥
बिन सारी सब फीको लागे, जल नहिं सरिता मेरे ॥ १ ॥

(५१)

ठुमरी ॥

पीर उदर कछु कहि नहिं जाई, पीरत शूलत बेधत भाई ॥
सारे उदर महीं शूलत मारत, वरछि बान बहुताई ।
लागत मोरे तो उदर महीं सब, कोमल हिय बिध जाई ॥१॥
कलपैं बिलपैं पुनि रोवैं बहु बिधि, असदुःख सहो न जाई ।
कालकूत निरखत सुजनक जननी, भ्रातादिक बिलपाई ॥२॥
बड़े बड़े वैद्य बड़ बड़ गुनिया, हारे कार कराई ।
ओषधि अरु फूंकनि कछु नहिं लागत, मंच तंच शुभगाई ॥३॥
ऐसी पीरा मैं कभु नहिं भोग्यो, जन्म जबते मैं पाई ।
कहं लगि बरणों मोहिं मृत्युआवे, हारदावं कहूं भाई ॥ ४

(५२)

गजल ॥

मेरीजान तुझ पर कुरबान, शबको नोंद नहीं आती है ।

तड़फ तड़फ कर शब कटती है, पागल मुझे बनाती है ॥
 जबजब याद करूं मैं तेरी, जान निकल तो जाती है ।
 तेरा दिल तो पत्थर हुआ है, मोहब्बत नहीं आती है ॥ १ ॥
 तेरे यार हुआ इख्त्यार, याद तेरी सताती है ।
 जरा नज़र करो गरीबों पर, याद हमेशह आती है ॥ २ ॥
 सख्त दिली तुम क्वांड़ी इतनी, नज़र तेरी घुमाती है ।
 हाथ जोड़के पैरों पड़के, अरज़ मेरी सुनाती है ॥ ३ ॥
 मारो नहीं जिलावे मुझको, ये मोहब्बत जाती है ।
 हमेशह करूं ताबेदारी, मेरे दिल में आती है ॥ ४ ॥
 लातों मारो बुक्री मारो, नज़र तेरी सताती है ।
 नज़र कटारी मारो मत तुम, छाती तो फट जाती है ॥ ५ ॥

(५३)

गज़ल ॥

नज़र भर देखलाई दे, मेरे यार, तू कहां है ।
 नहीं तो हुक्म दे मुझे, मैं आजाऊं, तू जहां है ॥
 मैं हो रहता हूं पागल, रहता नहीं, तू जहां है ।
 जान तड़फती है मेरी, ये मोहब्बत, तो कहां है ॥ १ ॥
 दिलदार मैं ताबेदार, रख हमेशह, तू जहां है ।
 करवाले ताबेदारी, ताबेदार, तो यहां है ॥ २ ॥

(५४)

गज़ल ॥

शब आधी बीती मेरे, दिलदार तो, तू कहां है ।
 नहीं तो खबर कर दे मुझे, तलफती हूं, तू जहां है ॥
 आने कहते थे हमसे, आये न अबलों कहां है ।
 करो कराए पूरा यार, जान निकली, क्या वहां है ॥ १ ॥
 ऐसा मालूम होता मुझे, आउं कह कर, तू वहां है ।
 मोहब्बत कभी न करती, नयार भला, तू कहां है ॥ २ ॥

(५५)

लावनी ॥

आज सखीरी खुशी मनावें, पिया हमारे घर आये ।
 बहुत दिनोंसे हमसे बिछड़े, दिल भरमुझको लपटाये ॥
 हवादार और परदेवार, खूब बंगला बनवाये ।
 तरह तरह की खूब सूरतें, तसबीरें सब लग वाये ॥ १ ॥
 पलंग उमदा तकिया तोषक, ऐसदार सब रखवाये ।
 गुलाब सेबति बहुत मोगरा, फूलोंसिजिया बिछवाये ॥ २ ॥
 खाना दाना तरह तरह का, मेवा भर भर पकवाये ।
 दूध दान और पान दान सब, ला ला कर सब रखवाये ॥ ३ ॥
 साथहिं मेरे ऐश किये फिर, दिली खुशी तब बतलाये ।
 आज खुशीहै ऐसी आली, मजा बहुतसा हम पाये ॥ ४ ॥

(५६)

लावनी ॥

क्या कहूँ मैं आली तुमसे, पिया तुम्हारे हैं बाँके ।
 कलकी शबकोखिड़की सेतो, मकानमेरेआ भाँके ॥
 उसी वक्ततो पिया हमारे, सोतेथे जबनींद भरे ।
 करवटलेने खसकेबाजू, गाफिलथे नहिं ज़राटरे ॥ १ ॥
 शायद मेरे पिया देखते, हालत मेरी क्याहोती ।
 कहे सखीरी मरना होता, पिया जागते मैंसोती ॥ २ ॥
 समझावो तुम सखी पियाको, ऐसा काम कभी नकरें ।
 पिया हमारे अकड़ बाजहैं, गुस्सावरहैं गुस्सा भरे ॥ ३ ॥

(५७)

चुटकला ॥

कहां मेरो सइयां बतावो आली ॥
 कहां मेरो सइयां कहां मेरो बलमा,
 अबहीं लाय दिखावो आली ॥ १ ॥

बिनादेखेसइयां मोरजियरा तलफत,
प्राणपयान सुजाओ आली ॥ २ ॥

(५८)

दादरा ॥

रूठे सइयां सवतनी घरगयेरी ॥

कछुहुन बोले कछुहुन चाले, नेकन मोरठिग आयेरी ।
कर भटके मोहे उतपटके, रिसभर चलउठ दयेरी ॥ १ ॥
जोरि कर चरण परीमैं हारी, तौहूं नहीं पिघलेरी ।
कछुहुन जानैं असमैं भोरी, कारण का को पठयेरी ॥ २ ॥
मैतो कछुहुन बोलीचाली, मैतोसप्रेमहिं लहेरी ।
काजाने सवती का कीन्ही, का मोहनी सुठयेरी ॥ ३ ॥
मनावो सखी वा सइयांको, जोनहिं माने अबकेरी ।
तोसजनी हैं सत्य कहतहैं, अब प्राणमोर निकरेरी ॥ ४ ॥

(५९)

दादरा ॥

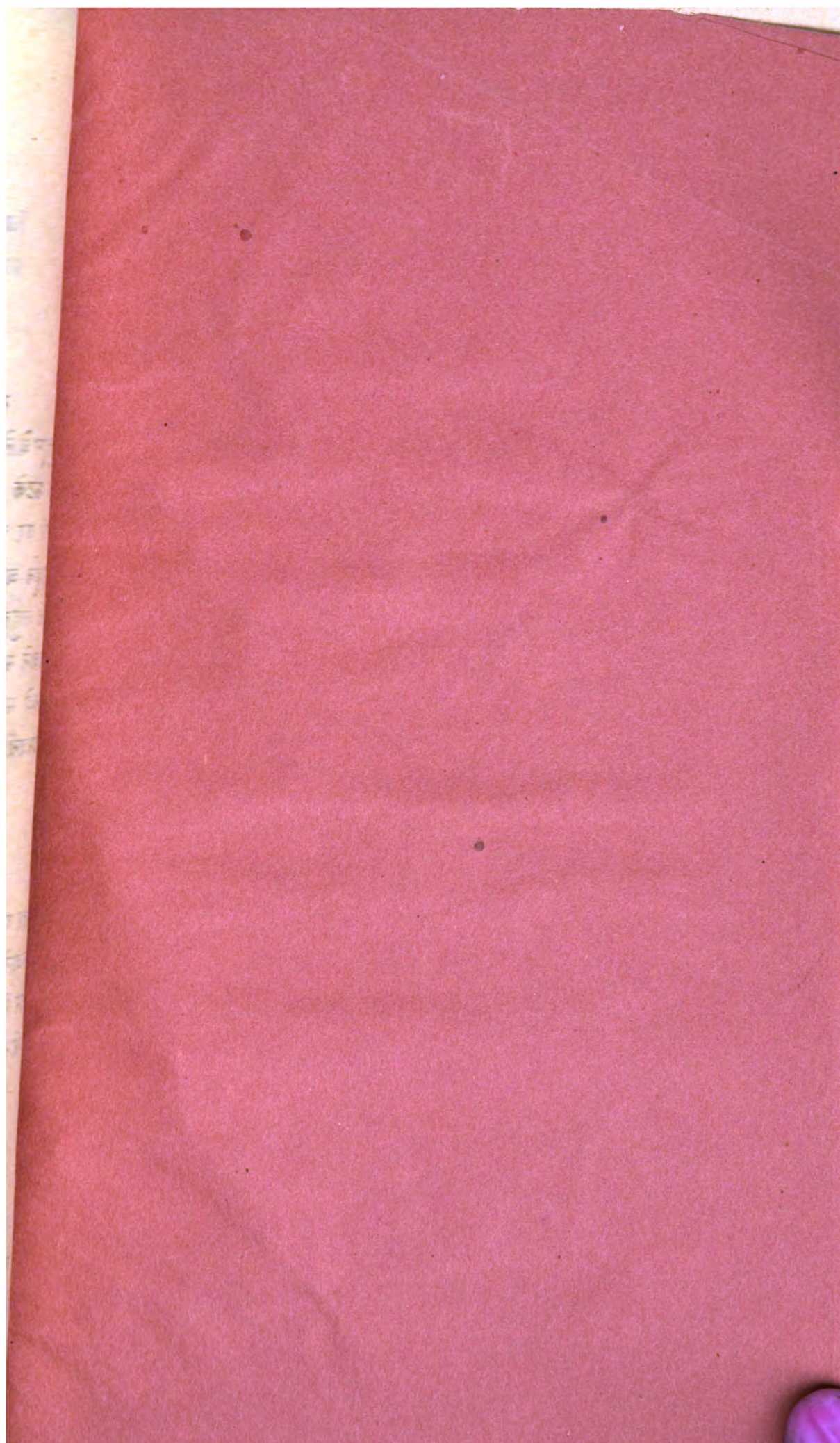
अबहुंन आई प्राण प्रिया मेरी ॥

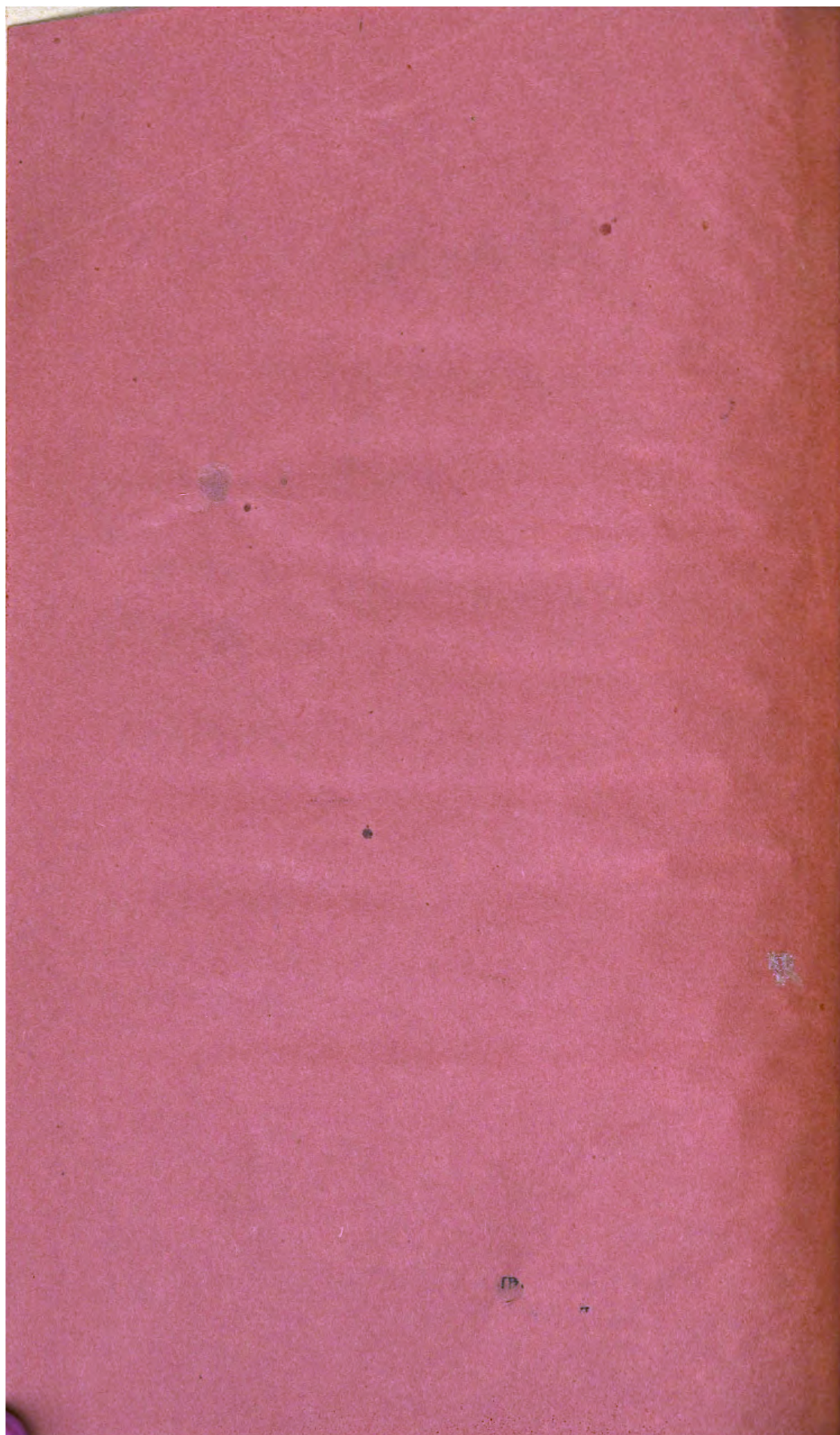
पहर पहर बहु बिलपत बीतत । बाट निहोरत तोरी ॥ १ ॥
नाजानों का कारण अटकी । चूकपरी नहिंथोरी ॥ २ ॥
तोर बिन मोर प्राण निकरहीं । आज तो ठिगमेरी ॥ ३ ॥
यदिनहिं आवो तो उठिभागूं । तोरे ठिग पहुंचोरी ॥ ४ ॥

(६०)

कहरवा ॥

सजनी मोरा साजन निकर गयेरी, बिगर गयेरी ॥
बालबढ़ायेपुनि राखलगाये । योगियाको भेषबनालियोरी ॥ १ ॥
हाथसुमरनीपुनिकमरलगांटी । बगलमांमृगछालाधरलियोरी ॥ २ ॥
थेबड़योगी काहैं अवयोगी । भोगीयोगी दोउकसभयोरी ॥ ३ ॥
कैयोग त्यागें जोनहिं आवैं । मैहूं जोगनि होऊंसंगमेरी ॥ ४ ॥







॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

(३५)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

(३६)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

